ऋगवेद ओ३म यजुर्वेद
सामवेद अथर्ववेद
वेदाङ्ग

आर्य प्रतिनिधि सभा फीजी - प्रचार कमीटी
Arya Pratinidhi Sabha Fiji
P.O. Box 4245, Samabula.
Phone - 386044. Fax 382592.

अक्टूबर - दिसम्बर प्रकाशन २०००
अंक २७

संस्कार

सन्यास संस्कार

संन्यास किसे कहते हैं ?

सन्यास उसे कहते हैं, जो मोह, माया, पक्षपात को छोड़कर सब पृथिवी में परोपकार के लिए घूमता रहे तथा अधर्म के कार्यों को दूर करके धर्म की स्थापना करे। सन्यास लेने वाले को सन्यासी कहते हैं।

सन्यास चारों आश्रमों में अन्तिम आश्रम है। जिस भावना की उन्नति पहले आश्रमों में करते आये हैं उसी की चरम सीमा सन्यास में होती है। जिस उद्देश्य को लेकर ब्रह्मचर्य आश्रम से चले थे, वह धीरे धीरे पूरा होता हुआ सन्यास में पूरे रूप से सिद्ध होता है। सब कामों का त्याग सन्यास नहीं। सच्चे अर्थो में सन्यासी वही है, जो मोह-ममता, राग-द्वेष, तेरे-मेरे की मन में जो गाँठें वँधी हों, उन्हें त्याग दे, छोड़ दे, भुला दे तथा सभी को अपना परिवार मान कर, भ्रमण करते हुए सब को सत्य उपदेश दिया करे जिससे समाज में सुख शान्ति बनी रहे।

सन्यास तभी लेना चाहिए जब वानप्रस्थ में रहकर अपने सभी बुराईयों को दूर कर दिये जायें।

अन्त्येष्टि संस्कार

मृत्यु पर एक विवेचन

जब आत्मा शरीर को त्याग देता है तब शरीर मृत हो जाता है। मृत्यु शरीर का होता है, आत्मा का नहीं। तो फिर शरीर छोड़ने के बाद आत्मा का क्या होता है ?

आत्मा शरीर छोड़ने के बाद अन्तरिक्ष का जो पोल है, उसमें जाता है, और यथा समय अपने कर्मों के अनुसार जन्म को ग्रहण करता है। अन्त्येष्टि - संस्कार में जो मन्त्र पढ़े जाते है उनमें बार बार इस बात को दोहराया गया है कि जीव शरीर को छोड़कर अपने कर्म अनुसार शरीर को धारण करता है। ऋषि दयानन्द ने इन मन्त्रों का चुनाव बड़ी योग्यता से किया है। उन मन्त्रों का अर्थ संस्कार चन्द्रिका नामक पुस्तक में दिये गये हैं। अन्त्येष्टि संस्कार करते हुए उन मन्त्रों की गहराई को समझने का प्रयत्न करना चाहिये क्योंकि उनमें बड़े गहरे सत्यों का वर्णन है।

अन्त्येष्टि संस्कार उसको कहते हैं जो शरीर के अन्त का संस्कार है, जिसके आगे उस शरीर के लिए कोई भी अन्य संस्कार नहीं है।

- मृत्यु सम्बन्धित प्रार्थनाए -

हे सच्चिदानन्द स्वरूप, सवित: देव ! आप को हमारा नमस्कार हो। समस्त ससार के निर्माता, विधाता तथा त्राता आप ही हैं। आप सबको गति देने वाले तथा व्यवस्था अनुसार अपने शासन को चलाने में स्वतन्त्र तथा महाबली है। आपका न्याय रूप शासन पक्षपात रहित सर्वत्र प्रसिद्ध है।

ओ प्रभु ! तेरी लीला अद्भुत है, तेरे खेल निराले हैं, हसतों को रुलाता है और रोतों को हँसाता है, पर यह सब काम किसी ऐसे अटूट और सुदृढ़ नियम पर आधारित है, कि साधारण जन उसके महत्व तथा रहस्य को नहीं जान पाते। सब को तू कर्म अनुसार फल देता है। जाति, आयु और भोग का निश्चय करता है। जिसका भोग जब समाप्त होना होता है, उसके प्राण अन्त का समय आ गया होता है, तब आत्मा का शरीर से वियोग, उसी तेरे नियम के आधार पर होता है और दिवङ्गत आत्मा का भी वैसे ही हुआ है।

हे न्यायकारी परमेश्वर ! हम याचना करते है कि तू इस दिवङ्गत आत्मा को उन कल्याणकारी, तपस्वी ऋषियों के सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा दें, जिन्हों ने स्वयं परम पद पाया है और हजारों भूले भटके व्यक्तियों को सन्मार्ग दिखलाया है और उज्जवल तथा पवित्र बुद्धि के कारण सूर्य की भान्ति चमके थें, अपने समाज तथा राष्ट्र के कल्याण के लिये दूर तक विचारते थे। वेद मन्त्र का मनन करके आचरण में लाते, यम-नियमों का पालन करते और कर्तव्य परायण थे।

हे प्रभु! कर्मानुसार तू फल प्रदाता है। हम यही प्रार्थना करते हैं कि हे प्रभु तू उस आत्मा को ऐसी प्रेरणा दें ताकि वो मोक्ष की प्रप्ति के लिए अग्रासर रहे।

हे प्रभु! कृपया मृत प्राणी की सन्तान तथा सम्बन्धियों को शक्ति, सुमति और शान्ति प्रदान करें ताकि वे इस वियोग और दुख को भुलाकर अपनी जीवन यात्रा को धर्मानुसार तय करते हुए तेरी दया, कृपा और भक्ति के पात्र बने रहें।

अन्त्येष्टि संस्कार के लिए सामान

जो सामान अक १ से ८ तक की सूची में नीचे दी गई है वो कम से कम का है। इस से कम घी आदि नहीं होना चाहिए। यदि अधिक सामर्थ्य हो तो अधिक लेवे, और यदि गरीब हो तो उसका प्रबन्ध कोई श्रीमान वा गाँव वासी करें। इन वस्तुओं को शव के साथ जलाने का मुख्य कारण यह है कि जलती हुई शव से कम से कम दुर्गन्ध वायु में फैले। अगर घी आदि कम मात्रा में प्रयोग किया जाएगा तो वायु में दुर्गन्ध फैलेगा, जिसके कारण लोगों में अनेक रोग फैल सकते है। इन वस्तुओं को अधिक मात्रा में प्रयोग करने से अधिक लाभ होगा। यह एक बहुत बड़ा पुण्य का कार्य है। ऐसा करने वाले मृत व्यक्ति के सम्बन्धीगण पुण्य के भागी होते हैं।

सामान-

१ बीस लीटर गाय का घी।
२ दस कीलो चावल।
३ दस कीलो चीनी।
४ चार पाकिट कपूर।
५ चौबीस पाकिट आगरवत्ती।
६ चार दर्जन हवन सामग्री - दसन्गम या परिमल ब्रेन्ड।
७ दो दर्जन सूखा नारियल।
८ आधा-आधा कीलो दाल चीनी, इलाइची तथा लौंग।
९ एक माचिस।
१० दो बड़ी थालियाँ।
११ दो बाल्टियाँ।
१२ दो गोला तथा दो सीधी बड़ी चम्मचें जिस में एक-एक मीटर के पकड़ने योग्य लकड़ियाँ बांध देवे।

संस्कार समाप्त